Rajasthan Patrika

EDII

August 10, 2021
Page No.4

जीएनएलयू में 'इन्ट्रोडक्शन टू सोशल एन्टरप्रेन्योरशिप' पर कार्यक्रम

'एक वर्ष में 85 फीसदी स्टार्टअप हो जाते हैं बंद'

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

गांधीनगर. करीब 85 फीसदी स्टार्टअप एक वर्ष में ही बंद हो जाते है। स्टार्टअप की बंद (मोर्टलिटी) होने की दर बहुत ज्यादा है।

हालांकि इसमें प्रि-इन्क्यूबेशन असिस्टेन्स मददगार हो सकते हैं। भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान (ईडीआईआई) के निदेशक डॉ. सुनील शुक्ला ने गांधीनगर स्थित गुजरात नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी (जीएनएलयू) में 'इन्ट्रोडक्शन टू सोशल एन्टरप्रेन्योरशिप' पर आयोजित कार्यक्रम में यह बात कही।

शुक्ला ने कहा कि भारतीय समाज में उद्यमिता को लेकर जागरुकता बढ़ रही है। स्टार्टअप इंडिया, स्टैण्डअप इंडिया और मुद्रा लोन जैसी योजनाओं के साथ ही सरकारी सहायता भी बढ़ रही है। इसके चलते ही कई स्टार्टअप कंपनियां बन रही हैं। हालांकि नए स्टार्टअप के बीच एक महत्वपूर्ण मुद्दे पर ध्यान नहीं दिया जा रहा है। यह मुद्दा स्टार्टअप के बंद होने की दर को लेकर है। उन्होंने कहा कि एक अध्ययन के मुताबिक करीब 85 फीसदी स्टार्टअप एक वर्ष में ही बंद हो जाते है। इसका कारण यह है कि उद्यमी कई बार अपने विचारों को लेकर काफी उत्साहित हो जाते हैं, लेकिन उसका ठीक तरीके से अध्ययन नहीं करते। वे अपने आइडिया का प्रैक्टिकल और बाजार में टिकने को लेकर मंथन किए बगैर ही बाजार में प्रवेश करते है। प्रि-इन्क्यूबेशन असिस्टेन्स स्टार्टअप बंद होने की दर में कमी लाने में मददगार हो सकते है। सर्जनात्मक, नवीनतम और कौशल निर्माण पर विशेष ध्यान केन्द्रित करना चाहिए।

सेन्टर फॉर एन्टरप्रेन्योरशिप डवलपमेन्ट के निदेशक डॉ. रामनाथ प्रसाद ने कहा कि हमारी शिक्षा व्यवस्था की समीक्षा करने की जरूरत है। शिक्षा के सभी स्तरों में भारी भरकम पाठ्यक्र म हैं। स्कूल-कॉलेजों में विद्यार्थियों को कई ऐसे विषय पढ़ाए जाते हैं, जिनका जीवन में कोई भी उपयोग नहीं होता।

टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेस की प्रोफेसर डॉ. समाप्ति गुहा ने कहा कि सामाजिक उद्यम लगातार दुविधा का सामना करते हैं। इनोवेशन की आवश्यकता सिर्फ उत्पादों और उत्पादन ही नहीं बल्कि विचारों में भी इनोवेशन होना जरूरी है।

उद्यमी बनना एक चुनौती : शांताकुमार

जीएनएलयू के निदेशक डॉ. शांता कुमार ने कहा कि उद्यमी बनना एक चुनौती है,सामाजिक उद्यमी बनना और भी चुनौती भरा है। इसके जरिए वे सामाजिक समस्याओं को सुलझाना चाहते हैं। भावी पीढ़ी में सामाजिक उद्यमी व्यवसाय या धंधे में आमूल परिवर्तन करेंगे। जीएनएलयू में रिसर्च एंड पब्लिकेशन के डीन अंबाटी नागेश्वर राव ने आभार जताया।